MANAGING EDITORS & TRANSLATORS

English Edition in India: Philemon Rajah & Kingsly Rajah
English Edition in Nigeria: Makinde Olefumi
English Edition in Ghana: Seth Larbi
Spanish Edition: Efrain Aranda
Telugu Edition, Tran: Joshua Gootam
Tamil Edition: Benny Martin, S. Rajanayagam
Hindi Edition: Earnest Gill
Nepali Edition: Nepal Center for Biblical Study
Paite Edition: Thang Lien
Marathi Edition: Amul Bansod

SUBSCRIPTION:

Single issue ₹ 30/- only
4 issues ₹ 100/- only
8 issues ₹ 200/- only
Please make check payable to

Earnest Gill
and
send to

EARNEST GILL,
5802-B, SECTOR 38 WEST,
CHANDIGARH-160014, INDIA

whatsapp & paytm no. 8284850007
Articles can also be sent to this address. But the printing solely depends upon the satisfaction of the ediorial committe and availablity of space.
basicbiblecourse@gmail.com,
hindibiblecourse@gmail.com

FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY

विषय सूची

बेदारी की ज़रूरत 1
अनुग्रह और सच्चाई 4
क्या प्रचार करें? 7
ईश्वरीय शोक 10
केवल सदाचार का एक बड़ा सिखाने वाला गुरु? 12
परमेश्वर में विश्वास बनाम थ्यूरी ऑफ़ एवोल्यूशन 14
परमेश्वर है! 16
हमारी भावी देह 17
पवित्र करने का क्या अर्थ है? 19
मछुआरा पतरस 21
स्वतन्त्रता की व्यवस्था 24
हम मसीह की शिक्षा में बने रहें 26
मसीह के सबसे बड़े बैरी 27
क्या पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है? 28
बाइबल, एक विशेष संदेश 29
वचन का प्रचार करना 30
असाम्प्रदायिक मसीहियत 32
मसीह की 34
परमेश्वर के लोगों का वर्णन करना 36
उसकी सुनो 38
अहंकार की कीमत 40
जय पाने वाले मसीही 42
क्या स्त्री उपदेश दे सकती है? 43
सतुंष्टि 47
परमेश्वर के विशेष लोग 49
परमेश्वर का वरदान 51
प्रेम की छुड़ाने वाली सामर्थ 53
बच्चों का पालन पोषण कैसे करें 56
क्या आप राज्य का बीज बो रहे हैं? 57
खोए हुए को सिखाने का आसान ढंग 58
6 छोटी कहानियां 60
गंदी भाषा 61
नूर फैलाओ 62
मुझे पहचानो 64
चुनौती लें! सरगर्म हों! 65
अच्छा मसीही 67
तुम को तुम्हारा पाप लगेगा 68
यीशु का सुसमाचार 70
''मैंने पाप किया है'' 73
पवित्र शास्त्र के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है? 75

बेदारी की ज़रूरत

—अर्नेस्ट गिल

बेदारी या रिवाइवल की बातें हम अक्सर सुनते हैं। उनके लिए जो इसका अर्थ जानना चाहते हों, कि बेदारी का अर्थ कया है, मैं बताना चाहता हूं कि बेदारी या रिवाइवल का अर्थ है बहाली। यानी परमेश्वर के साथ सम्बन्ध का बहाल होना। परमेश्वर ने मनुष्य को सृजा ही इसलिए था ताकि वह उसके साथ संगति कर सके। अदन की वाटिका से टूटे सम्बन्ध से लेकर मसीह के प्रथम आगमन के पहले तक मनुष्य की ओर से परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को सुधारने के जितने भी प्रयास किए गए, सब नाकाम रहे। इसका कारण उनका कर्मों के आधार पर होना था और यही बात परमेश्वर मनुष्य को बताना चाहता था कि उसके पास आने का तरीका वही बता सकता है। मूसा की व्यवस्था इसका बड़ा उदाहरण है जिसमें 10 आज्ञाओं वाली व्यवस्था दी गई जिन्हें बाद में 613 आज्ञाओं में विभाजित किया गया माना जाता है। जैसे यशायाह कहता है कि ''आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां'' (यशायाह 28:10)। पर अंत में यही साबित हुआ कि कोई व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी नहीं ठहर सकता यानी सही नहीं ठहर सकता।

असल में इक्कीसवीं सदी में मसीह की कलीसियाएं दुनिया भर में उसी बहाली का प्रयास कर रही हैं जो पहली सदी की एशिया माइनर की कलीसियाएं कर रही थीं जिसके बारे में हम प्रकाशितवाक्य 2–3 में पढ़ते हैं।

प्रभु ने इफिसुस में अपनी कलीसिया से कहा था, *''स्मरण कर कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहले के समान काम कर''* (प्रकाशितवाक्य 2:5)। परगमुम में अपनी कलीसिया से उसने कहा था, *''स्मरण कर कि तू ने कैसी*

शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी, और उसमें बना रह और मन फिरा'' (प्रकाशितवाक्य 3:3)। लौदीकिया में अपनी कलीसिया से उसने कहा था, *''सरगर्म हो और मन फिरा''* (प्रकाशितवाक्य 3:19)। ये प्रारम्भिक कलीसियाएं परमेश्वर के वचन से दूर हो गई थीं और यीशु ने उन्हें खरी शिक्षा के उस सांचे में अपने आप को बहाल करने का हुक्म दिया जो उन्हें शुरू में दिया गया था (तु. 2 तीमुथियुस 1:13)।

आज कोई अलग नहीं है। यीशु मसीह के नये नियम को मानने की जिम्मेदारी हमारी भी उतनी ही है जितनी उनकी थी। पहली सदी की कलीसियाएं कई बार गलत होती थीं और कई बार हम भी गलत होते हैं।

बहुत बार देखा जाता है कि लोगों को आत्मा में भरने को कहा जाता है। मैं समझता हूं कि यह सब से अधिक गुमराह करने वाला है। लोग अपने आप को आत्मिक होने का दावा करके परमेश्वर के वचन को पीछे छोड़ देते हैं। भावुक व्यक्ति होने में कोई बुराई नहीं है। पर भावना और सच्चाई आपस में दो अलग अलग बातें हैं। जिस प्रकार से अदालत में फैसला सबूत के आधार पर ही होता है उसी प्रकार परमेश्वर के सामने हमारा न्याय हमारी भावनाओं के आधार पर नहीं होगा। और परमेश्वर के साथ हमारा मेल भी उसके वचन के आधार पर ही होता है। प्रभु यीशु मसीह ने साफ कहा था कि *''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा''* (यूहन्ना 12:48)।

एक और जगह पर उसने अपने समय के लोगों से, जो कि यहूदी थे और मसीहा के आने की राह बड़ी शिद्दत से देख रहे थे (पर जब वो आ गया तो वे उसे पहचान नहीं पाए), कहा था, *''तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है,''* फिर उसने उन्हें बताया था कि *''यह वही है, जो मेरी गवाही देता है''* (यूहन्ना 5:39)।

यीशु हमें परमेश्वर से मिलाता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर से मिलने के लिए हमें उसे जानना आवश्यक है। पर उसे जानने के लिए कोई आदमी हमारी मदद केवल इसी सूरत में कर सकता है जब वह हमें उसके वचन से मिलाए, न कि चमत्कार करने

का दावा करके अपने पीछे लगा ले। उसमें जीवन नहीं है। यूहन्ना 20:30, 31 में कहता है कि *"यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।"*

अपनी पत्रियों में से एक में वह कहता है, *"उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ- यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ-जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए"* (1 यूहन्ना 1:1-4)।

शैतान द्वारा परीक्षा लिए जाने पर यीशु ने उसे ऐसा ही जवाब दिया था। जिसमें उसने कहा था कि *"**लिखा है,** 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा' "* (मत्ती 4:4)। पौलुस ने भी बताया कि *"विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है"* (रोमियों 10:17)।

सो परमेश्वर के पास आने और उसके साथ चलने के हमारे लिए वचन को सुनना/पढ़ना आवश्यक है। तभी हम परमेश्वर के निकट आ सकते है। तभी सच्चाई को जान सकते हैं। तभी जान सकते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारी संगति है। भावुक होना जवाब नहीं हैं। हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करना बेदारी नहीं है बल्कि परमेश्वर के साथ चलना बेदारी है। और बिना परमेश्वर के वचन को जाने हम नहीं जान सकते कि उसके पास वापस कैसे आना है। लूका 6:46 में यीशु ने ऐसे लोगों से जो केवल मुंह से प्रभु प्रभु कहते हैं, कहा था, *"जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,' कहते हो?"*

हमें विचार करना आवश्यक है कि सचमुच में बेदारी क्या है। और फिर बेदारी के लिए प्रयत्न करना भी आवश्यक है। ✞

अनुग्रह और सच्चाई

–जे. सी. चोट

अनुग्रह को अनार्जित कृपा, यानी बिन कमाया दान या वह दान कहा जा सकता है जिसका कोई हकदार तो न हो पर उसे फिर भी मिल जाए।

मसीह ने अनुग्रह का अर्थ इन प्रसिद्ध शब्दों में समझाया: *''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए''* (यूहन्ना 3:16)। पौलुस ने इसे इस प्रकार से बताया है, *''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा''* (रोमियों 5:8)।

प्रेरित आगे कहता है, *''इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत–मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं''* (रोमियों 3:23, 24)। *''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हों, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ वहां अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ, कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे''* (रोमियों 5:19–21)। *''तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन् अनुग्रह के आधीन हो''* (रोमियों 6:14)। इसके साथ ही याद रखें कि यूहन्ना ने लिखा है *''कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु के द्वारा पहुंची''* (यूहन्ना 1:17)। पौलुस के शब्दों को साथ में पढ़ें जहां उसने कहा, *''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ''* (2 कुरिन्थियों 8:9)।

अन्य शब्दों में, ये सभी आयतें कह रही हैं कि हम पापी थे, खोए हुए थे, बिना आशा के थे, अपना उद्धार करने में असमर्थ थे या भले कामों के करने के द्वारा उद्धार कमा पाने में अक्षम थे। और तो और, व्यवस्था (यानी मूसा की व्यवस्था) या अच्छा सदाचारी जीवन जीने, या अकेले मसीह की शिक्षाओं को मान लेने से भी हमारा उद्धार नहीं हो सकता था यानी ये सब बातें अकेले हमारा उद्धार नहीं कर सकती थीं। इसकी जगह मसीह की मृत्यु, उसका लहू बहना, और

अनुग्रह और करुणा का दान, इस तथा आने वाले संसार में हमारे लिए उद्धार को संभव बनाता है।

पौलुस ने इसे इस प्रकार से समझाया है, *''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे''* (इफिसियों 2:8, 9)। कृपया ध्यान दें कि वह कहता है कि हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा (मनुष्य का भाग) अनुग्रह से (परमेश्वर का भाग) हुआ है।

लेकिन कोई दलील दे सकता है कि परमेश्वर का भाग चाहे अनुग्रह है, पर वास्तव में मनुष्य का कोई भाग नहीं है। यकीनन, जैसा कि पौलुस ने कहा कि हम अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकते या हमारा उद्धार व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा नहीं हुआ, पर फिर भी *मनुष्य का भाग है।* बाइबल कहीं भी यह नहीं बताती कि उद्धार *केवल* अनुग्रह से या *केवल* विश्वास से ही होता है। परमेश्वर का अनुग्रह इस बात में है कि उसने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित्त के रूप में हमारी जगह अपने पुत्र को मरने के लिए दे कर उद्धार उपलब्ध करवाया है। विश्वास भी इसी अर्थ में है कि हम परमेश्वर में विश्वास लाएं और उस बलिदान को जो मसीह हमारे लिए बना, मान कर इस हद तक कि हम परमेश्वर की आज्ञा मान लें और उसके वफादार बने रहें।

उद्धार पाने और उसकी कलीसिया में मिलाए जाने के लिए कि हम उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से कर सकें और विश्वासी मसीही जीवन जी सकें, उसकी आज्ञाओं को मान लेने के बावजूद हमारे उद्धार के लिए केवल इतना ही काफी नहीं है। परमेश्वर की इन सब बातों को कर लेने के बाद भी यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो यह परमेश्वर के अनुग्रह से ही होगा।

लेकिन अगर हम जीवन भर उसकी इच्छा को मानने और उसके मार्ग में चलने से इनकार करते हैं तो भी परमेश्वर का सारा अनुग्रह भी हमारा उद्धार नहीं कर सकता। इफिसियों 2: 8, 9 में पौलुस ने केवल यही नहीं कहा है कि हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है, बल्कि इफिसियों 2:10 में आगे वह कहता है, *''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया।''*

तीतुस 3:3–7 में पौलुस ने लिखा, *''क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न मानने वाले, और भ्रम में पड़े हुए, और रंग रंग की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे; और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई। तो उस ने हमारा*

उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म से स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।'' परमेश्वर की प्रेरणा (इल्हाम) प्राप्त लेखक कह रहा है कि मनुष्य खोया हुआ था, परन्तु परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह और करुणा के कारण, और मनुष्य के स्नान (यानी बपतिस्मा) में परमेश्वर की आज्ञा मानने और पवित्र आत्मा का दान (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) पाने के कारण उसका उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा हुआ है और उसे अनंत जीवन की आशा मिली है। पौलुस इस पर भी जोर देता है कि हमें यह हमारे अपने धर्म के कामों के द्वारा नहीं बल्कि परमेश्वर की दया और अनुग्रह के द्वारा मिलता है।

दोबारा, वह कृपा हम पर केवल तभी होती है जब हम उसकी इच्छा का पालन करते हैं। कुछ लोग यह सिखाने को आतुर हैं कि हमारा उद्धार केवल परमेश्वर की कृपा से होता है।

कुछ ऐसे भी हैं जो तर्क देते हैं कि धार्मिक जगत मुकम्मल नहीं है, और न ही हम जो परमेश्वर के लोग हैं, और इसलिए, परमेश्वर की कृपा आखिरकार हर किसी को बचाएगी, उनकी त्रुटि के बावजूद। ये प्रभु की शिक्षा के झूठे विचार हैं। परमेश्वर के साथ व्यवहार करने के तरीके के बीच बहुत अंतर है अपरिपक्व बच्चे जो शास्त्र में अपने परिवार में पैदा हुए हैं, और उन लोगों के साथ जिनका नया जन्म नहीं हुआ है।

पौलुस अपने समय में इसी तर्क का इस्तेमाल कर सकता था झूठे शिक्षक, और उन सभी में त्रुटि, लेकिन उन्होंने नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने कहा, *''परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं है, पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसे ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो''* (गलातियों 1:7–9)। ✠

आपकी आशा को चुरा लेने वाले से बढ़कर कोई लुटेरा नहीं

क्या प्रचार करें?

-बायरन निकोल्स

परमेश्वर के लोगों के रूप में जिन्हें उसके पुत्र के लहू के बदले में खरीदा गया है, बिना किसी शक के हम अपने प्रचार और शिक्षा से उसको प्रसन्न करना और आदर देना चाहेंगे। पर सवाल यह है कि वह हम से क्या चाहता है कि प्रचार करें?

इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करते हुए मैं बहुत ज्यादा एकतरफा नहीं होना चाहता। पर मेरा मानना है कि इस बेहद महत्वपूर्ण सवाल का बड़ा ही सीधा उत्तर है।

''परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रगट होने, और राज्य को सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता हूं। कि तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएंगे'' (2 तीमुथियुस 4:1–4)।

हमें वचन मिलता है– ''वचन का प्रचार कर!'' पर इसके तुरन्त बाद एक और सवाल खड़ा होता है कि वचन का प्रचार क्यों करें? मन में एकदम तीन अच्छे कारण आते हैं। (1) क्योंकि परमेश्वर ने कहा है। यह अपने आप में काफ़ी होना चाहिए, पर दूसरा बहुत अच्छा कारण यह है कि (2) क्योंकि वचन को परमेश्वर की प्रेरणा दी गई है और यह कुछ हद तक उसके मन को दिखाता है (2 तीमुथियुस 3: 16)। और कारण जिसका उल्लेख हम यहां पर करेंगे वह यह है कि (3) क्योंकि वचन हमारे लाभ के लिए (2 तीमुथियुस 3:17) है। परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया पवित्र शास्त्र हमें इसलिए दिया गया है ताकि परमेश्वर के लोगों के रूप में हम ''हर एक भले काम के लिए तत्पर हो'' कर सम्पूर्ण, सिद्ध, पूरी तरह से विकसित हो जाएं।

परमेश्वर के लोग परमेश्वर के वचन के लोग होने आवश्यक हैं। वफादारी से वचन का प्रचार करने वाले प्रचारक अपने सुनने वालों को वचन को सही तरीके से बांटने, इसे सही तरीके से पकड़ने के योग्य होने में सहायता करते हैं (2 तीमुथियुस 2:15)। वचन में हमारे जीवनों को इस प्रकार से ढालने और आकार देने की सामर्थ है जिससे हम परमेश्वर की महिमा कर सकें। वचन

हमारे प्राणों का उद्धार भी कर सकता है (याकूब 1:21)। यह तभी होता है जब अधीन होकर हम वचन द्वारा दिए गए निर्देश को मान लेते हैं।

हमें वचन को ही सुनना आवश्यक है क्योंकि जब हम यह समझ जाएंगे कि इससे हमे जीवनों को कैसे चलाना है तो हम मनुष्यों के उन लच्छेदार भाषणों के बजाय जो लोगों को लुभाने और भाने के लिए अपने और सच्चाई के साथ कम्प्रोमाइज़ करने को तैयार होते हैं, वचन को ही सुनना चाहेंगे। परमेश्वर से प्रेम करने वाला व्यक्ति उन संदेशों को जो वचन में से नहीं हैं सुनने को प्राथमिकता क्यों देगा, खासकर तब जब यीशु ज़ोर देकर यह कहता है कि अंत के दिन में न्याय उसकी कही गई बातों के आधार पर होगा (यूहन्ना 12:48)? बेशक पौलुस को यीशु की इस बात के महत्व की समझ थी। गलातियों की पुस्तक अध्याय 1 में उसने किसी भी प्रचार को उस सुसमाचार से, जिस सुसमाचार का वह प्रचार कर रहा था, अलग होने की चेतावनी दी। यह तय कर पाना कठिन नहीं है कि वह क्या प्रचार कर रहा था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में और नये नियम के पत्रों में हम पढ़ सकते हैं कि उसने क्या लिखा। उसने केवल और केवल वचन का बड़ी वफ़ादारी से प्रचार किया! इसी प्रकार से पौलुस इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से ईमानदारी से कह पाया, *''इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूं कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूं। क्योंकि मैं परमेश्वर के सारे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका''* (प्रेरितों 20:26, 27)। कोई एतराज करता है कि वचन पर ज़ोर देने वाले लोग कठोर, असहिष्णु, अविवेकी और प्रेम रहित होते हैं। वचन (या सुनने वालों) को लोगों को पीड़ा पहुंचाने वाले मुगदर या हथियार के रूप में इस्तेमाल करके इसका दुरुपयोग करने का यह कोई बहाना नहीं है। परमेश्वर के इरादे से बढ़कर कोई कुछ नहीं है। लेकिन मित्रो, वचन का प्रचार इस प्रकार से भी किया जा सकता है कि इसे उचित ढंग से दयालु, करूणा, कृपा, नरमदिल और प्रेमी के रूप में भी सुनाया जा सकता है। मैं जानता हूं कि यह सही है। मेरे साथ प्रेरितों 20 अध्याय की आयतें 36–38 को देखें। ये लोग जिन्हें पौलुस ने *''परमेश्वर के सारे अभिप्राय''* को बता दिया था। उसके गले लग लगकर और उसे चूम चूमकर ज़ोर ज़ोर से रो रहे थे। यह दिखाते हुए यह पता चलने पर कि वे इस जीवन में दोबारा उसे नहीं देखेंगे, बड़ा शोक कर रहे थे। अपने प्रचार तथा अपने जीवन के द्वारा पौलुस ने उन्हें दिखा दिया था कि वह उनकी कितनी परवाह करता था और अब वे यह दिखा रहे थे कि वे उसकी कितनी परवाह करते हैं।

सो यह बहुत ही सम्भव है कि दृढ़ता से *''वचन का प्रचार''* किया जाए और फिर भी प्रेम रहित, कठोर और बेपरवाह न हुआ जाए। हे प्रचारको, प्रभु से और उन्हें भी प्रेम करो और जिन्हें तुम वचन सुनाते हो कि उन्हें दिलेरी, यकीन, निडरता के साथ पर सर्वदा प्रेम से, ''वचन का प्रचार'' कर सको (इफिसियों 4:15)। हे एल्डरो, इसी बात पर ज़ोर दो कि केवल वचन का ही प्रचार किया जाए और इस बात का ध्यान रखो कि आपकी मण्डलियों को बाइबल की बुनियादी शिक्षाओं पर सरमन दिए जाएं। हे मसीहियो, वचन का अध्ययन करो और उन प्रचारकों और ऐल्डरों को जो वफ़ादारी से वचन सुनाते हैं उन्हें शाबाशी दो और उनका साथ भी दो।

क्या संदेश परमेश्वर द्वारा बोला गया था?

बहुत सी पुस्तकें हैं जो परमेश्वर का संदेश होने का दावा करती थीं। बेशक उन सब पुस्तकों में से बाइबल निराली है। पन्द्रह सौ साल से अधिक समय की अवधि में चाहे परमेश्वर द्वारा 40 लेखकों को प्रेरणा दी गई पर बाइबल का संदेश एक ही कहानी के रूप में है। पहेली की तरह जिसमें टुकड़े एक दूसरे के साथ जुड़ते हैं। बाइबल मनुष्य के आरम्भ, परमेश्वर के साथ उसके सम्पूर्ण सम्बन्ध, धार्मिकता से उसके गिरने, परमेश्वर के उस तक पहुंच करने, और अंत में मनुष्य के परमेश्वर के साथ फिर से मिल जाने के बारे में बताती है।

बाइबल में जहां भी इतिहास, विज्ञान, पुरातत्व, मनुष्य के स्वभाव, या किसी भी अन्य तथ्य का संकेत है वहां यह उसे साबित भी करती है। बाइबल के बैरियों ने कभी इस पर अविश्वास नहीं जताया।

''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

जो लोग समझदार हैं वे इस जीवन में दिशा के लिए और उसके साथ अनन्त जीवन की तैयारी के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई बाइबल की ओर ही देखेंगे।

अगले अंक में: मेरा उद्धार कैसे हो सकता है?

ईश्वरीय शोक

–फ्रैंक चेसर

परमेश्वर कोई उदासीन, बेलगाव ईश्वर नहीं है जिसमें अपनी मानवीय दृष्टि के लिए भावनाएं न हों। उसने अपने आपको अपने और अपनी संतान के बीच की भावनात्मक नाभिरज्जू को काटकर स्वर्ग में अपने आपको अलग नहीं कर लिया है। मनुष्य के लिए उसकी भावनाओं की कोई सीमा नहीं है।

इसलिए *''यीशु रोया''* (यूहन्ना 11:35)। फरीसियों के अविश्वास से परेशान होकर, यीशु *''उनके मन की कठोरता से उदास''* हुआ था (मरकुस 3:5)। वह *''हमारी निर्बलताओं में, हमारे साथ दुखी''* होता है (इब्रानियों 4:15)। पौलुस ने मसीही लोगों को समझाया कि *''परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित''* न करें (इफिसियों 4:30)। मानवीय अर्थ में कहें तो इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की आंखों में आंसू आते हैं।

निमन्त्रण के द्वारा होशे परमेश्वर के मन के अंदर गया। उससे *''एक वेश्या को अपनी पत्नी बना''* लेने को कहा गया (होशे 1:2), एक स्त्री जिसकी कोख में वेश्यावृति का बीज हो। समय आने पर बढ़कर फला। गोमेर होशे और अपने तीन बच्चों को छोड़कर फिर से पाप में लग गई जिससे उसकी जवानी और सुन्दरता एक गुलाम की कीमत के बराबर थी (होशे 3:1, 1)।

होशे गोमेर से बेहद प्यार करता था। वह क्षमा करने वाला पति और समर्पित पिता था, फिर भी गोमेर ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया और उसके मन में उदासी के खूंटे ठोक दिए। निश्चय ही नबी की सिसकियां आधी रात की खामोशी में चुभती होंगी और रात को उसके आंसुओं में नहाती होंगी।

परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता था। उसने उसे जातिय जन्म के लहू में पड़ी पाया। उसने उसे नहलाया और ईश्वरीय आशिषें पहनाईं। जब

वह जवान हुई तो उसने उसे अपनी पत्नी बना लिया (यहेजकेल 16:1–14)। परमेश्वर एक सिद्ध पति था। इस्राएल के लिए उसका प्रेम सब लोगों के लिए उसके प्रेम की तरह गहरा और अथाह था। इस्राएल उसकी *''आंख की पुतली''* था (व्यवस्थाविवरण 32:10)।

इस्राएल ने परमेश्वर के प्रेम को नकार दिया। हठी उपेक्षा से उसने ऐलान किया, *''मेरे यार जो मुझे रोटी पानी, अन, सन, तेल और मधु देते हैं, मैं उन्हीं के पीछे चलूंगी''* (होशे 2:5)। उसने देश के बाल देवताओं के आगे माथा टेका और परमेश्वर का दिल तोड़ दिया। उसका व्यवहार यहूदा के जैसा ही था जिसने उसे अपने पहले प्रेम के पास वापस आने के लिए परमेश्वर की याचना भरी पुकार का उत्तर बड़ी कठोरता से दिया था, *''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि मेरा प्रेम दूसरों से हो गया है और मैं उनके पीछे चलती रहूंगी''* (यिर्मयाह 2:25)।

हर प्रकार का पाप तो अंत में परमेश्वर के ही विरुद्ध है। दाऊद ने इस बात को समझ लिया था जब उसने कहा, *''मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है वही किया है''* (भजन 51:4)। यूसुफ ने पोतिपर की पत्नी को इनकार करते हुए यह कहकर इस बात से सहमति जताई, *''मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूं''* (उत्पत्ति 39:9)। क्या आप परमेश्वर की आंखों में और आसूं बढ़ाएंगे? ✞

धन्य शोक करने वाले

अगर कोई रात ही न होती, तो तारों को भी न देख पाते;
आकाश की चमक तो आंखों को चुंधिया देती;
आज़ादी क्या होती है यह तो जेल की सलाखों में रहने वाला या पिंजरे का पंछी ही बता सकता है और;
समन्दर की लहरें बंदरगाह की गंदगी को समेट ले जाती हैं
आनन्द को हम उनके नुकसान को जाने बिना नहीं जान सकते;
आशिषें जब घटने लगती हैं, तभी हमें उनकी समझ आती है;
जब हमारे धन का इकट्ठा होना क्रूस के आस पास बढ़ता है
और बहुत समय तक स्वर्गदूत लोगों के पास गीत गाते हैं

लेखक –अज्ञात

केवल सदाचार का एक बड़ा सिखाने वाला गुरु?

–टॉम कैल्टन

यीशु नासरी संसार का अब तक का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है। गलील के इस गुरु का प्रभाव मनुष्यजाति पर किसी भी अन्य व्यक्ति से बढ़कर है।

वह अपनी तरह का महान सदाचार का सिखाने वाला था। वह बड़े अधिकार के साथ बात करता था: *''तुम सुन चुके हो, ... परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं ...।''* वह बड़ी ही सरलता से बात करता था जिससे साधारण लोग उसकी बात को आसानी से समझ सकते थे। उसकी बात में असाधारण गहराई होती थी: *''अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उनका भला करो''* (लूका 6:27)। उसकी समझ से बार–बार उसके विरोधियों का मुंह बंद हो जाता था: *''जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो''* (मत्ती 22:21) उसकी शिक्षा बड़ी स्पष्ट और दैनिक जीवन से बेहद मेल खाती थी। धन्य सामरी के अपने दृष्टांत के अंत में उसने कहा, *''जा, तू भी ऐसा ही कर''* (लूका 11:37)।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि लोग यीशु की शिक्षा पर अचम्भा करते थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसकी बातों को सुनकर लोग हर जगह उसके पीछे हो लेते थे। उनका कहना होता था कि *''किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं''* (यूहन्ना 7:46) और उनका यह कहना बिल्कुल सही होता था।

परन्तु यीशु और उसकी शिक्षा की असाधारण बात कुछ और है। मनुष्यजाति के पास उच्चतम मानक वाली शिक्षा के साथ–साथ वह असल में इस को पर अपने ऊपर भी लागू करता था। वह लोगों को केवल अपने शत्रुओं से प्रेम करना सिखाता ही नहीं था बल्कि उसने उन्हें जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, माफ़ भी कर दिया। उसने लोगों से अपने मित्रों के लिए अपना प्राण देने को केवल कहा

ही नहीं, उसने इसे दे भी दिया। यह उसे अन्य सब गुरुओं में सबसे श्रेष्ठ बना देता है।

यीशु ने अपने आप को सदाचार की शिक्षा देने वाले गुरु से कहीं बढ़कर दिखाया। सो या तो वह सचमुच में कहीं बढ़कर था या फिर कहीं कम था। उसने सबसे चौंकाने वाले दावे किए। यानी ऐसे दावे जो किसी समझदार व्यक्ति द्वारा अब तक नहीं किए गए हैं। उसने दावा किया कि वह लोगों के पाप क्षमा कर सकता है, उसने दावा किया कि उसे यह अधिकार है कि लोग उसकी आराधना करें। उसने दावा किया कि परमेश्वर तक पहुंचाने का मार्ग केवल वही है। परमेश्वर की सच्चाई वही है। परमेश्वर का जीवन वही है और यह कि वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया था, कि वह बहुतों के छुटकारे के लिए अपना प्राण देगा और मुर्दों में से जी उठेगा और न्याय के दिन हर मनुष्य को उसे हिसाब देना होगा।

सुसमाचार के चारों विवरण यीशु के अलौकिक दावों से भरे पड़े हैं। क्या उसके सभी दावे सच्चे थे? यदि हां तो वह केवल एक बड़ा गुरु नहीं बल्कि इससे कहीं बढ़कर था। वह परमेश्वर का पुत्र था, जो हमारे मानवीय स्वभाव में सहभागी होकर हमें बताने के लिए परमेश्वर सचमुच में कैसा है, देहधारी होकर आया था।

दूसरी ओर क्या यीशु अपने बारे में झूठ बोल रहा था या वह पागल था? यदि वह झूठ बोल रहा था या वह सनकी था तो उसे किसी भी प्रकार से ''सदाचार का बड़ा सिखानेवला'' नहीं कहा जा सकता।

वह क्या ''सदाचार का बड़ा सिखानेवला'' था? या तो हम उसके दावों को और उसकी शिक्षाओं को मान लें या फिर दोनों को नकार दें। यदि हम उस सब को जो उसने अपने बारे में बताया निकाल देते हैं तो हम गुरु के रूप में उसकी भलाई को भी निकाल देते हैं।

फ्री बाइबल कोर्स

घर बैठे हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी भाषा में
डाक कोर्स प्राप्त करने के लिए
अपना नाम व पता 8284850007 पर व्हटसअप करें। बताएं कि
आप किस भाषा में बाइबल कोर्स करना चाहते हैं।

परमेश्वर में विश्वास बनाम थ्यूरी ऑफ़ एवोल्यूशन

-×€â ÂÅÚâÙ

थ्यूरी ऑफ़ एवोल्यूशन यानी (बंदर से मनुष्य बनने के विकास की शिक्षा) की विकासवाद की शिक्षा की एक बात है कि यह बदलती रहती है। यह केवल बदलती नहीं रहती, बल्कि विकासवादियों में किसी भी प्रकार से किसी एक विचार पर सहमति नहीं पाई जाती। कुछ बदलाव इस प्रकार से हैं: आज शायद कोई भी विकासवादी मूल में दी गई थ्यूरी ऑफ़ एम्ब्रियोनिक रिकैपिटुलेशन को उसी रूप में न माने। कोई इस शिक्षा को नहीं मानता कि निर्जीव वस्तु से खड़े पानी में जीवाणु होते हैं। बहुत सी कथित ''गायब कड़ियों'' को जिन्हें पहले माना जाता था पर अब या तो उन्हें मज़ाक समझा जाता है या उन पर संदेह किया जाता है, और ''गायब कड़ी'' के बारे में विचार अब बदल चुके हैं।

दूसरी ओर, *परमेश्वर नहीं बदलता है।* वह कल, आज और युगानयुग एक सा है। वह वही है जिसने छह दिनों में पृथ्वी और सब कुछ बनाया और सातवें दिन आराम किया। वह वही परमेश्वर है जिसने अपने पुत्र यीशु को संसार में भेजा, ताकि संसार उद्धार पा सके।

प्रकृति और भूविज्ञान के तथ्य विकासवाद की शिक्षा का नहीं बल्कि सृष्टि की रचना कहानी का समर्थन करते हैं। पृथ्वी की तह की चट्टान के निचले 4/5 बेजान होता है और फिर अचानक जीवन प्रकट होता है। यह पूरी पृथ्वी पर आम तौर पर एकदम से मिलता है और जीवन के उन अधिकतर रुपों को दर्शाता है जिन्हें हम अब जानते हैं। विकासवादी लोगों को इस प्रकार का प्रमाण नहीं चाहिए, और असल में यह उनके दावों के लिए बड़ा ही घातक है। पृथ्वी की परत में अंतर को किसी प्रलय या भूकम्प जैसी किसी अन्य उथल–पुथल से समझाया जा सकता है।

कथित कैंब्रियनकाल (जिसमें जीवन अचानक अस्तित्व में आया) में, जीवन के वैसे रूप थे जैसे अब हम जानते हैं जिसमें वर्ग, व्यवस्थाएं और परिवार हैं। एक आलोचना जो मुझे लगता है कि सही है वह यह है कि बहुत से विकासवादी लोग पहले से यह मान लेते हैं (जैसा कभी किसी वैज्ञानिक ने नहीं किया) कि प्राप्त आंकड़े इस बात का समर्थन करेंगे कि वे प्रकृति के विकास की बात को मानते हैं पर वे अभी इसे साबित नहीं कर सकते। सो उनकी धारणाएं ''भविष्य'' में होने

वाली खोजों पर आधारित हैं जिसकी उन्हें उम्मीद हैं कि होंगी पर अभी नहीं हुई हैं।

प्रकृति के विकास यानी एवोल्युशन की शिक्षा के प्रसिद्ध होने का असल कारण यह है कि परमेश्वर का विकल्प देने का प्रयास किया जाता है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो परमेश्वर के होने के विचार को ही नकारते हैं और वे विश्वास को न मानने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं परन्तु विचारशील व्यक्ति के लिए किसी शिक्षा को बता देना ही काफ़ी नहीं है। उसके लिए कुछ प्रमाण देना यानी ऐसा प्रमाण जो कभी दिया नहीं गया, आवश्यक है। ऐसा कोई प्रमाण है नहीं! एवोल्यूशन यानी विकासवाद की शिक्षा विज्ञान की कल्पना है।

परमेश्वर के एक जन ने बहुत पहले प्रार्थना की थी, *''हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है। इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है''* (भजन संहिता 90:1, 2)।

क्या संसार परमेश्वर को अपनी ही समझ के द्वारा जान सकता है?

नहीं।

1 कुरिन्थियों 1:21– *''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे।''*

1 कुरिन्थियों 2:4–16– *''फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं, परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं; परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया। जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। ... परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। ... जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं। ... 'क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए?'' परन्तु हम में मसीह का मन है।''*

परमेश्वर है!

-फलेविल निकोल्स

यह अपने आप में ही प्रमाण है कि कुछ नहीं यानी शून्य से कुछ नहीं होता। इस सिद्धांत को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यदि कभी कोई ऐसा समय रहा हो जिसमें कुछ नहीं (शून्य) था, तो इसका अर्थ यह हुआ कि कभी कुछ नहीं हो सकता। था। कुछ है! इसलिए कुछ है जो सदा से है!

नास्तिकवाद की शिक्षा हमें यह विश्वास दिलाना चाहती है कि वह ''कुछ'' मृत, बेजान, शक्तिहीन, नासमझ ''तत्व'' ही है जो सदा से अस्तित्व में है।

परन्तु इसके विपरीत बाइबल यह बताती है कि बाइबल का परमेश्वर यहोवा वह ''अनादि'' यानी वह ''कुछ'' है जो सदा से है! *''अतः हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो कि कोई जन उनके समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े''* (इब्रानियों 6:11)। बाइबल ऐलान करती है: *''अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है''* (भजन 90:2)। वह *''अनादि परमेश्वर है''* (व्यवस्थाविवरण 33:27)।

हां! बाइबल का परमेश्वर भूतकाल की दिशा में भी उतना ही अनादि है जितना भविष्यकाल की दिशा में अनादि है। वह अपने विषय में ऐलान करता है, *''मैं यहोवा हूं, और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं''* (यशायाह 45:5)। इसी कारण उसने आज्ञा दी है, *''तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर''* (मत्ती 4:10)।

आरम्भ, जब भी हुआ हो, परमेश्वर वहीं था! नास्तिकवादी की शिक्षा के विपरीत, *''आदि में परमेश्वर ने ...''* मानना तर्कसंगत है। अपने आप में अस्तित्व में होने वाले, सबसे समझदार, सबसे शक्तिशाली और सबसे भले परमेश्वर ने *''आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की''* (उत्पत्ति 1:1)। यह बाइबल का परमेश्वर है। अपने पुत्र यीशु मसीह के पापियों को छुड़ाने के लिए पृथ्वी पर आने से पहले उसने पुराने नियम में अपने आपको प्रकट किया। यही परमेश्वर अब मनुष्य के साथ, संसार के हर प्राणी के साथ, अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा बात करता है (इब्रानियों 6:1,2)। ✠

हमारी भावी देह

जॉन थियसन

मसीही विश्वास की मुख्य आशा मुर्दों के जी उठने पर आधारित है। यह अनन्तकाल की परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं का महाद्वार है। हमारे लिए उन निवासों में प्रवेश करने से पहले जिनकी प्रतिज्ञा यीशु ने की है, जी उठने में से गुज़रना आवश्यक है।

पुनरुत्थान के दिन अपनी कब्रों में से निकलने पर हमारी देहें कैसी होंगी? यह आशा रखने वाले सब लोगों के लिए यह विषय बड़ी दिलचस्पी और जिज्ञासा का है।

मसीह की देह सी देह

हमारी जी उठी देह उस देह जैसी होगी जो इस समय यीशु की है। यूहन्ना ने कहा, *''हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है''* (1 यूहन्ना 3:2)। पौलुस ने कहा, *''हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के ... आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन–हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा''* (फिलिप्पियों 3:20, 21)।

पर यह लहू और मांस की देह नहीं होगी, क्योंकि पौलुस ने समझाया कि *''हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है''* (1 कुरिन्थियों 15:50)। हमारी नाशवान देह का जो कब्र में पड़ी हुई होगी, एक ऐसी भूमि पर जो इस संसार की यानी पृथ्वी की चीज़ों से नहीं बनी, के लिए मेल खाने से बदलना आवश्यक है

क्योंकि पौलुस ने कहा, *''हम सब बदल जाएंगे''* (आयत 51)।

आत्मिक देह

हमारी इस वर्तमान देह के विपरीत जो लहू और मांस की बनी हुई है, हमारी देह आत्मिक होगी। जैसे *''स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है''* (1 कुरिन्थियों 15:44)। पौलुस आगे समझाता है कि यह आत्मिक देह अविनाशी, आत्मिक और अमर होगी (आयतें 42, 44, 53)।

कोई पूछ सकता है, ''हमें कैसे मालूम जी उठना होगा ही?'' अनन्त जीवन के लिए कब्र में से यीशु का अपना जी उठना हमारे जी उठने का आश्वासन देता है। क्योंकि परमेश्वर ने *''उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है''* (प्रेरितों 17:31)। कब्र में यीशु की अपनी सफल विजय से बढ़कर कोई और सबूत नहीं है। उसकी सफलता के कारण और हमें भी जिलाने की उसकी विश्वसनीय प्रतिज्ञा के कारण, हमें पक्का यकीन और उम्मीद है कि हमारी भी उस समय जी उठी नई देह होगी, जब उसमें विश्वास लाने वालों को उससे मिलने के लिए हवा में बुला लिया जाएगा।

परमेश्वर ने अपने आपको कौन सी दो पुस्तकों के द्वारा प्रकट किया है?

उसने हम पर खुद को प्रकृति की पुस्तक में और पवित्रशास्त्र की पुस्तक में दिखाया है।

प्रकृति की पुस्तक क्या है?

प्रकृति की पुस्तक से हमारा अभिप्राय भौतिक संसार या हमारे आस–पास की दुनिया है।

परमेश्वर ने प्रकृति की पुस्तक में हमें क्या दिखाया है?

उसने हमें अपने सर्वशक्तिमान होने को और अपनी महिमा को दिखाया है।

''इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया'' (रोमियों 1:20) और ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है'' (भजन संहिता 19:1)।

पवित्र करने का क्या अर्थ है?

-गलैन कोली

अपने उन पाठकों को जो प्रचारक हैं या बाइबल क्लास में पढ़ाते हैं, मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि वे लोगों को ''पवित्र करने'' शब्द पर कुछ सिखाएं। पुराने तथा नये दोनों नियमों में इस शब्द पर कई आयतें हैं। इससे आपके सुनने वालों और छात्रों के मसीही जीवन में समृद्धि आएगी।

थेयर ने इस शब्द का अर्थ (1) आदरणीय बनाना या पाक करना; (2) लौकिक चीज़ों से अलग करना और परमेश्वर को समर्पित करना, अर्पण करना और इस प्रकार भ्रष्ट होने से बचाना; (3) शुद्ध करना के रूप में की है।

इस अवधारणा के कुछ विचार इस प्रकार से हैं:

1. पुराने नियम में कई अलग अलग चीज़ें ''पवित्र की जाती'' थीं।

बाइबल में इस शब्द का पहला प्रयोग उत्पत्ति 2:3 में है, *''और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।''* इसका अर्थ यह हुआ कि इस दिन को सेवा के लिए अलग किया गया था। तम्बू को पवित्र किया गया था (सेवा के लिए अलग किया गया) (निर्गमन 29:42), हारून और उसके पुत्रों को सेवा के लिए पवित्र किया गया था (लैव्यव्यवस्था 8:30); याजकों के लिए अपने आपको पर्याप्त रूप में पवित्र करना आवश्यक था (2 इतिहास 30:3); और यिर्मयाह को उसके जन्म से पहले पवित्र किया गया और जातियों का भविष्यवक्ता ठहराया गया था (यिर्मयाह 1:5)।

2. यीशु ने प्रार्थना की कि चेले पवित्र हों।

''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। केवल यही आयत इस विषय के महत्व को दिखाती है। यीशु चाहता था कि उसके अनुयायी संसार से अलग हैं! यूहन्ना 17 में ''जगत'' शब्द अठारह बार इस्तेमाल हुआ है। इनमें से ग्यारह बार ''जगत'' अविश्वासियों की उस भीड़ को कहा गया है जो मसीह के बिना हैं। मसीह के लिए पवित्र होकर और उसकी देह का अंग बनकर हम जीवनशैली और आशा में संसार से अलग हो जाते हैं।

3. हमें सच्चाई के द्वारा पवित्र किया जाता है।

''और उनके लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूं, ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं'' (यूहन्ना 17:19)

4. हमें विश्वास से पवित्र किया जाता है

''... कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं'' (प्रेरितों 26:18)

5. हमें बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेने के द्वारा पवित्र किया जाता है

''कि उस (यानी कलीसिया) को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए'' (इफिसियों 5:26)।

6. हमें यीशु के लहू के साथ पवित्र किया जाता है

''इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया'' (इब्रानियों 13:12)।

7. पवित्र किए गए लोग स्वर्ग में जाएंगे

''और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है''(प्रेरितों 20:32)।

8. पवित्र किए जाने के लिए पाप को छोड़ना आवश्यक है

अफ़सोस की बात है कि बहुत से लोग जो आज धर्म/परमेश्वर की स्वीकृति चाहते हैं असल में वे किसी ऐसी कलीसिया की तलाश में हैं जो कम से कम पवित्र होने की मांग करे। जब किसी पुरुष या स्त्री को मसीह में परिवर्तित किया जाता है तो उन्हें दुनियादारी से ''अलग'' किया जाता है। यदि वे सांसारिक हैं तो वे पवित्र नहीं हुए हैं।

1 कुरिन्थियों 6:9–11 कहता है, *''क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ; न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, ... परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और* ***पवित्र हुए*** *और धर्मी ठहरे।'' ''क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्थात व्यभिचार से बचे रहो''* (1 थिस्सलुनीकियों 4:3)।

9. यदि मैं समझदार हूं, सही जीवन जीता हूं, और पवित्र किया गया हूं और मेरा उद्धार हो गया है, तो यह इसलिए है क्योंकि मैंने मसीह में होने का निर्णय लिया

हमारे जीवन मसीह में बने रहते हैं। हमारे लिए जीना मसीह है। बच्चों के एक गीत की तरह जिसमें कहा गया है ''वो मेरा सब कुछ मेरा सब कुछ वो ही है।...'' *''परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा''* (1 कुरिन्थियों 1:30)। *''पर मसीह को प्रभु जानकर अपने–अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ''*(1 पतरस 3:15)। ✠

मछुआरा पतरस

-ओ. पी. बेयर्ड

शमौन पतरस और उसका भाई अंद्रियास मछुआरे थे। जबदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना उनके भागीदार थे। एक दिन यीशु की सेवकाई के आरम्भ में, वह गनेसरत की झील (जिसे गलील की झील भी कहा जाता है) नाव में बैठकर किनारे पर लोगों को एक बड़ी भीड़ को सिखाने लगा (लूका 5)।

''जब वह बाते कर चुका तो शमौन से कहा, 'गहिरे में ले चल, और मछलियां पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।' शमौन ने उसको उत्तर दिया, 'हे स्वामी, हम ने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा' जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछलियां घेर लाए, और उनके जाल फटने लगे। इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया कि आकर हमारी सहायता करो, और उन्होंने आकर दोनो नावें यहां तक भर लीं कि वे डूबने लगीं'' (5:4–7)।

विश्वास से आशीष कैसे मिलती है

मानवीय दृष्टिकोण से तो यीशु ने जो कुछ कहा था उसका कोई मतलब नहीं था। क्योंकि मछली तो रात को पकड़ी जा सकती थी। रात भर कोई मछली हाथ न आने के बाद मछुआरा अगली सुबह वहीं पर जाल नहीं डालता जहां पहले उसे कोई मछली न मिली हो। पतरस ने यीशु को बताया कि उन्होंने रात भर जाल डाले थे। फिर उसने एक ऐसी बात कह दी जो उसके विश्वास को दिखाती है। *''... तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।''* पतरस का

विश्वास था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। इसलिए वह जो कुछ भी आज्ञा देता है वह सही ही होगी और पतरस ने उसे मानना था।

विश्वास यही तो है। मसीह में विश्वास बिना संदेह किए उसकी हर आज्ञा को ज्यों का त्यों मानने के लिए उकसाता है। विश्वास इसी प्रकार से दिखाया जाता है खासकर जब मानवीय तर्क के विपरीत किसी बात को करने को कहा जाए। ऐसी ही एक आज्ञा यीशु के जी उठने के बाद पतरस द्वारा दिए संदेश में मिलती है। उसने लोगों को बताया कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और उसे प्रभु भी और मसीह भी बना दिया। *''तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, 'हे भाइयो, हम क्या करें?' पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे' ''* (प्रेरितों 2:37, 38)। मानवीय समझ से चलने वाला व्यक्ति यह तो मानेगा कि मन फिराना आवश्यक है, पर उसे यह नहीं लगेगा कि उसके पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा आवश्यक हो सकता है। इस आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए विश्वास का होना आवश्यक है। परन्तु यह केवल इसलिए आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर इसकी आज्ञा देता है।

पतरस का भय

''यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरा और कहा, 'हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं!' ... तब यीशु ने शमौन से कहा, 'मत डर; अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा' '' (लूका 5:8–10)। पतरस ने यीशु में परमेश्वर की सामर्थ को काम करते हुए देखा, और वह भयभीत हो गया, क्योंकि वह पापी मनुष्य था। किसी को यदि पता हो कि वह पापी है और वह परमेश्वर को केवल उसकी सामर्थ में ही देखता हो तो वह भयभीत हो जाएगा। दुष्टात्मा परमेश्वर की सामर्थ को जानते हैं और इसी कारण वे थरथराते हैं (याकूब 2:19)।

परन्तु यदि हम परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं और उसकी क्षमा हमें मिल गई है तो हमारा भय जाता रहता है और उसकी जगह हमारे जीवन में वह प्रेम और आनन्द आ जाता है जिसे यीशु मसीह देता है।

मुर्दों में जी उठने के बाद यीशु ने मछली वाला आवश्चर्यकर्म दोबारा से किया। उसके कुछ चेले मछलियां पकड़ रहे थे और यीशु ने उन्हें नाव के दूसरी ओर जाल डालने को कहा। जब उन्होंने उसकी बात मान ली तो जाल मछलियों से भर गया। प्रेरित यूहन्ना पुकार उठा, *''यह तो प्रभु*

है!'' (यूहन्ना 21:7)। तब पतरस प्रभु से अपने पापी होने के कारण उससे दूर होने को कहने के बजाय झील में कूदकर तैरकर जल्दी से यीशु के पास चला गया। जो लोग अपने पापी होने को जानते हैं और क्रूस पर दिए गए उद्धारकर्त्ता के द्वारा परमेश्वर के प्रेम के उन तक पहुंचने को देखते हैं, वे उस से क्षमा पाने के लिए जल्दी से विश्वास करके आज्ञा मान कर उसके निकट आ जाते हैं।

पतरस से यीशु के वायदे

यीशु ने पतरस से यह कहते हुए कि *''मत डर''* उस से कहा, *'' 'अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा।' और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए''* (लूका 5:10, 11)। पतरस और उसके साथी मछलियां पकड़ा करते थे और यीशु की बात मानकर वे बाहर आए और वे मनुष्यों को पकड़ने लगे। मनुष्यों को पकड़ने के लिए उन्होंने जिस जाल का इस्तेमाल किया वह मसीह का सुसमाचार था।

अपने जी उठने के बाद यीशु ने अपने चेलों से कहा, *''इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं''* (मत्ती 28:19, 20)। संसार में बहुत से लोग हैं जो पाप में खोए हुए हैं। मसीह चाहता है कि उसमें विश्वास रखने वाले लोग, जाकर उन्हें सुसमाचार बताएं और उन्हें मसीह के पास लेकर आएं। ✠

पवित्रशास्त्र की पुस्तक का क्या मतलब है?

पवित्र शास्त्र की पुस्तक का मतलब बाइबल है।

पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा (परमेश्वर के श्वास) से दिया गया साहित्य है। *''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए''* (2 तीमुथियुस 3:16, 17)

स्वतन्त्रता की व्यवस्था

-टी. पियर्स ब्राउन

यह दुखद बात है और लगभग समझ से बाहर ही है कि कितने लोग हैं जो अब यह सिखा रहे हैं कि हम मसीही लोग किसी व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। हाल के दिनों में इस पर काफ़ी कुछ लिखा जा चुका है पर मुझे उम्मीद है कि यह लेख अलग दृष्टिकोण से इस विषय पर कुछ प्रकाश डालेगा और विचार किए जाने के योग्य होगा।

निम्न हवाले वे कुछ वचन हैं जो लगभग अविश्वसनीय बना देते हैं कि ऐसे लोग हैं जो यह सिखाते हैं कि हम किसी व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। रोमियों 5:13, *''जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप गिना नहीं जाता।''* यदि कोई व्यवस्था न होती तो पाप भी नहीं होना था, और उद्धारकर्त्ता की भी आवश्यकता नहीं होनी थी! रोमियों 8:2 कहता है, *''क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।''*

1 कुरिन्थियों 9:21 खास तौर कहता है, *''व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूं) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं।''* यह कहने का कि हमारे पास व्यवस्था है और इसे मानने की जवाबदेही हमारी है, मुझे इससे साफ़ तरीका नहीं पता। गलातियों 6:2 *''मसीह की व्यवस्था''* को पूरी करने की बात करता है। इब्रानियों 8:10 नई वाचा की बात कहता है। *''मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा।''* यदि हम किसी प्रकार की व्यवस्था के अधीन न होते तो इसका क्या अर्थ होना था? याकूब 1:25 में कहता है, *''जो व्यक्ति स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है''* और 2:11 में वह कहता है, *''तुम उन लोगों के समान वचन बोलो, और काम भी करो, जिसका न्याय स्वन्त्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा।''*

यदि किसी को व्यावहारिक तौर पर इन आयतों की कोई समझ न भी हो तो भी उसे इस पर संदेह नहीं हो सकता कि **किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था** के अधीन हैं और हमारा न्याय इसी के द्वारा होगा।

सम्भवतया कई कारणों से इस व्यवस्था को *''स्वतन्त्रता की व्यवस्था''* कहा जाता है। परन्तु बिना शक उनमें से एक यह है कि उस व्यवस्था का आज्ञापालन ही है जो हमें पाप और इसके प्रभुत्व से स्वतन्त्रता दिलाता है।

मूसा की व्यवस्था *''मृत्यु की वाचा जिसके अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे''* (2 कुरिन्थियों 3:7) जबकि *''जीवन की आत्मा की व्यवस्था मसीह यीशु में''* (रोमियों 8:2) *''हृदयों पर लिखी*

गई है'' (रोमियों 8:10), परन्तु है यह व्यवस्था ही।

जो लोग यह सिखाते हैं कि हम किसी व्यवस्था के अधीन नहीं हैं वे शायद ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें व्यवस्था को मानने के आधार नियम पर धर्मी होने और व्यवस्था के आज्ञाकारी या अधीन होने के अर्थ की समझ नहीं है।

जिस प्रकार से मूसा की व्यवस्था केवल कुछ सुझाव समूह नहीं थे, वैसे ही मसीह की आज्ञाएं भी सुझाव नहीं हैं। वे स्वर्ग में और पृथ्वी के सारे अधिकार के साथ मानने के लिए हैं (मत्ती 28:18)। परन्तु यदि हम व्यवस्था को मानने के नियम पर धर्मी ठहराए जाना चाहते हैं तो हम इसे कभी तोड़ें न। यदि आप यह दावा करते हैं कि आपने इसे कभी तोड़ा नहीं है तो आपने इसे अभी–अभी तोड़ा है (रोमियों 3:23)। परन्तु यदि आप यह मान लेते हैं कि आपने इसे तोड़ा है तो आप यह दावा नहीं कर सकते हैं कि आप इसे मानने के आधार पर धर्मी ठहराए गए हैं।

परन्तु बहुतों का उत्तर होगा, ''परन्तु मैंने तो मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था, और यह तो व्यवस्था को मानना ही हुआ न।'' यह व्यवस्था के एक भाग को मानना है। परन्तु याकूब कहता है, *''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहर चुका''* (याकूब 2:10)। हम सब इस बात को समझ सकते हैं कि यदि आपने कोई बैंक लूटा हो और कैशियर को मार डाला हो, तो केवल इतना कह देना काफ़ी नहीं होगा कि ''मैंने कानून नहीं तोड़ा है! मैंने लाल बत्ती को पार नहीं किया और न ही स्पीड लिमिट से अधिक गाड़ी चलाई!'' नियम यह है कि यदि आप व्यवस्था के मानने के आधार पर धर्मी ठहराए जाना चाहते हो तो आपको इसे पूरी को मानना पड़ेगा।

सो हम उस व्यवस्था के अधीन हैं जो कि स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था है। परन्तु हम केवल इसलिए धर्मी नहीं ठहरते कि हमने इसके कुछ भाग को माना है। हम उसके अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहरते हैं, यदि/जब उसके अनुग्रह के द्वारा हम उसके उद्धार को जो मसीह में हैं, उसकी शर्तों को स्वीकार करते हैं। उसकी शर्तें आसान हैं, उसका जूआ सहज है और उसका बोझ हलका है, परन्तु आपको उसका जूआ उठाना तो पड़ेगा (मत्ती 12:29)। और जब आप उठा लेते हैं तो आप यह मान लेंगे कि (1) आप उसकी व्यवस्था के अधीन काम करते हैं, (2) आपका उद्धार उसके अनुग्रह के द्वारा हुआ है, और (3) आप उसकी व्यवस्था को मानने के आधार पर धर्मी ठहराए गए यानी बचाए गए हैं। पर इस तथ्य के बावजूद कि आपने इसे कई बार तोड़ा है! ✠

हम मसीह की शिक्षा में बने रहें

–जी. एफ. रेनस

धार्मिक जगत के लोगों के लिए मेरे मन की बड़ी इच्छा और परमेश्वर से प्रार्थना है कि ऐसा समय आए कि नये नियम में बताई गई मसीह और उसकी कलीसिया सबसे ऊंचे हों और हर प्रकार के गुट और डिनोमिनेशन को पूरी तरह से खत्म करके केवल मसीह का सुसमाचार ही हो और मनुष्यों के बनाए सब धर्मसार (अकीदे), सब शिक्षाएं और विचार जाते रहें। जब तक नियम से बढ़कर नीति को, कर्त्तव्य से बढ़कर पसंद को, और परमेश्वर के पवित्र वचन की सच्चाई से बढ़कर कल्पना को बढ़ावा दिया जाएगा, तब तक धार्मिक जगत गुटों और दलों में बुरी तरह से बंटा रहेगा।

जैसा कि सी. सी. क्राफोर्ड ने सही कहा है, ''मन को बदलने, विवेक को चंगाई देने और आत्मा को बचाने वाला नये नियम का संदेश ही है, यदि इसे पूरी शुद्धता और सादगी के साथ दिया जाए। मसीही लोगों को चाहिए कि जहां बाइबल बोलती है वहां बोलें और जहां बाइबल खामोश है वहां खामोश रहें।''

इस्राएलियों से परमेश्वर ने कहा था, *''जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना''* (व्यवस्थाविवरण 4:2)।

पौलुस कहता है, *''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए''* (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

यदि आप जानना चाहते हैं कि उद्धार कैसे पाना है तो कृपया अपनी बाइबल में से इन हवालों को खुद पढ़ें (वे इतने स्पष्ट हैं कि उनकी व्याख्या किए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है): (मरकुस 16:16; यूहन्ना 3:5; प्रेरितों 2:38; 8:26–40; 2 पतरस 1:5–11)।

यीशु कहता है, *''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूं और क्या क्या बोलूं? और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिये मैं जो कुछ बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं''* (यूहन्ना 12:48–50)। ✠

मसीह के सबसे बड़े बैरी

मसीह के सबसे बड़े शत्रु वे ''विश्वासी'' हैं जो वास्तव में अविश्वासी हैं, जो पवित्र शास्त्र का आलोचनात्मक अध्ययन करने में जीवन बिता देते हैं और पवित्र पुस्तक की हर बात को खारिज करते या दोबारा से लिखते या उसका विरोध करते रहते हैं। वचन के प्रति उनका दृष्टिकोण यह है कि इसे उस समय के लोगों के द्वारा या चेलों के द्वारा लिखा गया न कि यह परमेश्वर का इल्हाम प्राप्त वचन है। बाइबल को केवल इतिहासकारों की पुस्तक के रूप में देखना और उन लेखों को उन घटनाओं के बहुत बाद लिखा होना बताकर ये ''विद्वान'' बड़ी चतुराई से ऐसी धृष्ट बातों से पवित्र शास्त्र के अधिकार और सत्यता में विश्वास को कमज़ोर करते हैं, जैसे ''सुसमाचार के विवरणों से लेखकों ने जो उन्हें याद रहा उसे लिख दिया,'' और ''इस कहानी में, हो सकता है कि ऐसा ही हुआ हो।''

इस प्रकार ये उदारवादी ''विद्वान'' यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बाइबल केवल उसी समय के लिए लिखी गई थी न कि हर युग के लोगों के लिए परमेश्वर का संदेश है। वे मसीह और उसकी शिक्षाओं की उपयोगिता को उस संस्कृति और पहली सदी के लोगों के लिए बताते हुए उनका चीर फाड़ कर देते हैं। वे यह मान लेते है कि आज के समय में हम, उन लेखों का विश्लेषण जैसे चाहे कर सकते हैं, यानी जो हमें उपयोगी लगे उसे ले लें और जो काम का न लगे उसे छोड़ दें। परन्तु उन्हें लगता है कि व्यवस्था सारी मनुष्यजाति के लिए मानने के लिए नहीं है।

ऐसे लोग कई सैमिनरियों में टीचर हैं। इसलिए आश्चर्य की बात नहीं कि उनके चेलों की संख्या बढ़ रही है जो इस कथित विश्वासी दुनिया में प्रीस्ट, प्रीचर और लीडर बन जाते हैं, और वे भी बाइबल को एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ से बढ़कर नहीं देखते। इसके अलावा इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आम तौर पर धार्मिक जगत में विश्वास कम होता जा रहा है।

यह सवाल बिल्कुल वाजिब है कि ''जब मसीह आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास को पाएगा?''

बैटी बर्टन चोट

क्या पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है?

-जिम्मी जिविडन

कुछ लोग जो मसीह के अनुयायी होने का दावा करते हैं, यह सवाल उठा रहे हैं कि पवित्र शास्त्र विश्वास तथा व्यवहार के लिए पूर्ण, अर्थात सामान्य मानक है। बौद्धिक स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक अनुकूलता तथा राजनैतिक उपयोगिता की आड़ में वे उन्हें डराने के कोशिश करते हैं जो धार्मिक मानक के रूप में पवित्र शास्त्र को मानते हैं।

इन सवालों में आम तौर पर सही धार्मिक शब्द होते हैं पर वे उन शब्दों की व्याख्या जो कुछ वे मानना चाहते हैं उसी के अनुसार करते हैं। भाषा की आड़ में अपने मन के संदेहों को छुपाना कपट है। सच्चाई को सामने आने का भय नहीं होता।

ये संदेह करने वाले जब यह कहते हैं कि उनका विश्वास है कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है तो हो सकता है कि परमेश्वर की प्रेरणा या इलहाम के सम्बन्ध में उनका विश्वास बाइबल पर विश्वास करने वाले व्यक्ति से अलग हो।

हो सकता है कि वे मानते हों कि बाइबल उसी अर्थ में परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है जैसे किसी कवि को लिखने की प्रेरणा मिलती है। उनके कहने के अनुसार यह सही है कि पवित्र शास्त्र में महान आत्मिक साहित्य है परन्तु गीता या कुरान जैसी पुस्तकों में भी तो है।

यह संदेह करने वाले यह विश्वास करते हैं कि पवित्र शास्त्र उस समय के लिए जिसमें यह लिखा गया था परमेश्वर की प्रेरणा से था परन्तु आज यह प्रासंगिक नहीं है। उनका मानना होता है कि पवित्र शास्त्र सांस्कृतिक परम्पराओं से इतना बंध गया है कि अब वह प्रासंगिक नहीं रहा।

हो सकता है कि यह संदेह करने वाले यह मानते हों कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है यदि कोई उसे माने तो वे यह सुझाव देंगे कि एक वचन आपके लिए परमेश्वर की प्रेरणा से है परन्तु कोई दूसरा वचन नहीं, और प्रेरणा उस पढ़ने वाले में है न कि वचन में।

अविश्वास के कई रूप होते हैं। ऊपर बताई गई बातें अविश्वास के प्रसिद्ध रूप हैं जो आप कई कलीसियाओं में मिल सकते हैं। हमारे समय की बुनियादी धार्मिक मुद्दे डॉक्ट्रिन, राजनीति तथा व्यवहारों पर नहीं बल्कि इस बात पर हैं कि विश्वास और व्यवहार की अगुआई पवित्र शास्त्र से हो या न। हम बाइबल की ओर से युद्ध कर रहे हैं।

पवित्र शास्त्र के परमेश्वर की प्रेरणा से होने पर सवाल उठाने का अर्थ मसीह के परमेश्वर होने पर भी सवाल उठाना है क्योंकि केवल पवित्र शास्त्र के द्वारा ही हम यीशु मसीह को जान सकते हैं।

बाइबल, एक विशेष संदेश

–हौलिस मिलर

क्या आप एक पल के लिए भी यह मान सकते हैं कि आपने कभी यीशु या मसीही विश्वास के बारे में नहीं सुना है? यदि न सुना होता तो क्या आप बाइबल की सबसे बुनियादी शिक्षाओं से भी अनजान न होते?

एक दिन किसी ने आपको बाइबल दी और आपको बताया कि जब आप इसे पढ़ेंगे तो आपको दुनिया की सबसे बड़ी कहानी पता चलेगी यानी यह कि पृथ्वी का आरम्भ कैसे हुआ, और मनुष्य क्या है और उसका अंत क्या है। आपको यह भी बताया गया कि आपको एक बड़ी प्रलय के बारे में पढ़ने को मिलेगा जो किसी समय पूरी पृथ्वी पर आई थी, एक नई जाति के उदय के बारे में जिसे इस्राएल कहा जाता है और नबियों के बारे में जिन्होंने अपने समय से बहुत पहले भविष्य में होने वाली घटनाओं को ऐसे ब्यान कर दिया जैसे वे उनके सामने हो रही हों। बाइबल के देने वाले ने कह दिया, ''तुम्हारा मन और हृदय विश्वास, मन फिराव, बपतिस्मा, प्रभु भोज, चंदा, प्रार्थना, सुसमाचार, पुनरुथान और ऐसी अनेक बातों से, जिनका तुम्हें पता चलेगा, चकित होगा।'' बेशक आप चकित होंगे कि ऐसी अद्‌भुत कहानी मानवीय उपज की कल्पना कैसी हो सकती है।

आइए अब अभी–अभी बताए गए माने गए मामले से वास्तविक परिस्थिति में चलते हैं जिसमें इस लेखक के अधिकतर पाठक अपने आपको पाएंगे। बाइबल आपके लिए कोई अजनबी पुस्तक नहीं है और आप इसमें बताई गई कहानी से पहले से काफ़ी कुछ समझते हैं।

परन्तु समस्या तो है। बहुत से लोग जो बाइबल की कहानी को जानते हैं वे यह बताते हैं कि वे थोड़ा यहां और थोड़ा वहां विश्वास करते हैं या हो सकता है कि विश्वास न करते हों, परन्तु क्यों ऐसा क्यों है? क्या किसी ने कभी इस कहानी को झूठा साबित किया है? नहीं, परन्तु विरोध करने वाले मनुष्यों की शिक्षाएं और दावों की कमी नहीं है। परन्तु सच्चाई ने इसकी शांति को कभी भंग नहीं किया।

अगली बार जब आप बाइबल को पकड़ें तो याद रखें कि आपके हाथ में ऐसी किताब है जो अपने आप में निराली है। आपके हाथ में आपको मिला परमेश्वर का संदेश है।

वचन का प्रचार करना

-हैंस जे. डैडरशेक

परमेश्वर की इच्छा है कि मसीही लोग सुसमाचार को सुनाने में अपना समय दें (मत्ती 28:18–20)। अपनी दिनचर्या के बीच में हम सब को खुशखबरी के प्रसार (प्रचार) के लिए अवसर देना चाहिए (रोमियों 12:7, 8; 13:11–14)। पौलुस *''अवसर को बहुमूल्य समझने''* पर ज़ोर देता है (कुलुस्सियों 4:5)।

प्रभु के वचन से नया जीवन मिलता है। आरम्भिक कलीसिया के साधारण लोग जहां भी जाते काम करते व रहते हुए वहां पर रोमी साम्राज्य के सब इलाकों में नये नियम की शिक्षा को ले गए। यदि आप के मसीही लोग वैसे ही करें तो जहां पर वे इस समय हैं वहां से परिणाम जबर्दस्त होंगें। पाप दोष लगाता है; परन्तु मसीह लोगों को पाप और मृत्यु से छुड़ाता है (रोमियों 6)। मनुष्यों को बचाने का केवल यही एक तरीका है। मसीह में विश्वास परमेश्वर का वचन सुनने से आता है (रोमियों 10:17; मरकुस 16:15, 16)।

सुसमाचार को इसमें बिना कुछ जोड़े या इसमें से निकाले (प्रकाशितवाक्य 22:18–19) ज्यों का त्यों सुनाया जाए (प्रेरितों 20:26, 27)। सुसमाचार केवल एक है, चाहे बहुत से लोग झुठा सुसमाचार सुनाते हैं (गलातियों 1:6–9)।

मसीही व्यक्ति का प्रचार स्पष्ट संदेश होना आवश्यक है जिससे परमेश्वर की महिमा होती हो। यह ''किसी को दुख न देने'' के इरादे से समझौता करने के अर्थ में सुसमाचार ''साझा करना'' नहीं है। मसीही लोग प्रेम और संयम से परन्तु बिना लोगों के पक्षपात के प्रचार करते हैं (कुलुस्सियों 3:23; 1 थिस्सलुनीकियों 5:6–11)।

परन्तु कलीसिया की उन्नति वचन को और सुनने वालों को तोड़ मरोड़कर बनावटी ढंग से नहीं होगी। यदि हमारा प्रचार सामाजिक मनोरंजन है, तो यह सुसमाचार सुनाना नहीं है। हो सकता है कि धर्म में मनोवैज्ञानिक हेरफेर लोगों को गिरजाघर (चर्च भवन) में ले आए परन्तु वे परमेश्वर के अनन्त राज्य से विहीन रहेंगे। सच्चाई और प्रेम से वचन का प्रचार करें परन्तु प्रभु द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार।

मसीही लोगों के लिए सम्पूर्ण सुसमाचार सुनाने के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पवित्र शास्त्र का इस्तेमाल करना आवश्यक है। परमेश्वर का यह सम्पूर्ण संदेश लोगों को हर एक भले काम के लिए *''तत्पर''* कर सकता है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। सम्पूर्ण रूप में मनुष्य को *''सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता*

है'' देता है (2 पतरस 1:3)। आंशिक सुसमाचार जिसे झूठे शिक्षकों द्वारा बताया जाता है वास्तव में सुसमाचार है ही नहीं, क्योंकि यह अंत में दोषी ठहराता है।

मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि सुसमाचार का प्रचार करते हुए केवल एक ही बात यानी परमेश्वर की आज्ञा मानने से प्रेरित होकर मसीही जीवन जीएं और अच्छी बातें सिखाएं। कलीसिया के लोगों को लुभाने के लिए कभी प्रचार न करें, किसी के दबाव में आकर किसी बात का प्रचार न करें। सच्चाई का प्रचार प्रेम से, पवित्र शास्त्र के सम्पूर्ण अधिकार से करें। वरना आपका प्रचार और शिक्षा बेकार, मनुष्य को लुभाने वाली और विकृत होगी। मसीही लोग पूरी सच्चाई का प्रचार करें। आंशिक सच्चाई अधूरे सुसमाचार की तरह ही है।

सांसारिक और मानववादी व्यवहार उस आत्मिक जीवन को नष्ट कर देगा जो केवल सुसमाचार से मिलता है। मसीह के सुसमाचार के सम्पूर्ण संदेश में बने रहें। *''क्योंकि ऐसा समय आएगा, जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएंगे''* (2 तीमुथियुस 4:3, 4)।

हमें सुसमाचार पूरे का पूरा सुनाना होगा, नहीं तो हम मसीह के विरुद्ध परिश्रम करने वाले ठहरेंगे। ✠

बाइबल शब्द का क्या अर्थ है?

इसका अर्थ है पुस्तक। बाइबल यीशु मसीह के द्वारा छुटकारे के इतिहास की पुस्तक है। यह मनुष्य को दिए गए परमेश्वर के प्रकाशनों का यथावत अभिलेख और उसकी प्रेरणा से दिया गया संदेश है। केवल यही पुस्तक है जिसे कहा जा सकता है कि इसका लेखक परमेश्वर है। हर मायने में यह पुस्तकों की पुस्तक है।

असाम्प्रदायिक मसीहियत

–बॉबी डॉकरी

नामवर यूरोपीय थियोलॉजियन डॉ. हैंस कुंग ने कुछ साल पहले एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की जिसका शीर्षक केवल इतना था, *द चर्च*। इस पुस्तक में उन्होंने इस बात पर अफसोस जताया कि स्थापित कलीसिया ने अपना रास्ता खो दिया है, परम्परा के दलदल में धंस गई है और वह नहीं रही जो मसीह इसे बनाना चाहता था कि यह बने। डॉक्टर कुंग के अनुसार इसका केवल एक इलाज पवित्र शास्त्र में वापस जाकर यह देखना है कि आरम्भ में कलीसिया कैसी थी और फिर बीसवीं सदी में इसे उस मूल कलीसिया के गुण से मिलाया जाए! अन्य शब्दों में हमें असाम्प्रदायिक यानी डिनोमिनेशन रहित मसीहियत को मानने की ओर वापस जाना आवश्यक है! मेरा अपना मानना है कि डिनोमिनेशन रहित मसीहियत सम्भव हो सकती है यानी बिना किसी डिनोमिनेशन का मैंबर बने हमारे लिए प्रभु की कलीसिया का मैंबर बनना सम्भव है! 21वीं सदी में डिनोमिनेशन रहित मसीहियत को फिर से आरम्भ करने के लिए इन बातों का होना आवश्यक है:

1. केवल बाइबल के आधार पर सब विश्वासियों की एकता।

2. कलीसिया के विश्वासवचन तथा व्यवहार के लिए मनुष्य के सभी धर्मसारों और विश्वास के अंगीकारों को हटाकर बाइबल को रखा जाए।

3. कलीसिया का एकमात्र मुखिया या सिर (हैड) मसीह को ही माना जाए।

4. प्रत्येक स्थानीय मण्डली स्वायतः (अपना प्रबन्ध आप करने वाली) और स्वतन्त्र हो।

5. परमेश्वर के लोगों के लिए केवल बाइबल के नामों का ही इस्तेमाल किया जाए।

6. नये नियम की कलीसिया द्वारा अपनाए जाने वाले प्रबन्ध, आराधना तथा मैंबरशिप की शर्तों को बहाल किया जाए।

क्या हमारे गुटबंदी में फंसे, मतों में बंटे धार्मिक संसार में डिनोमिनेशन रहित मसीहियत सचमुच में सम्भव है? अधिकतर का उत्तर होगा कि ''नहीं!'' उन्हें ''डिनोमिनेशन रहित मसीहियत'' का विचार ही न पूरा होने वाला सपना लगेगा। परन्तु बाइबल इसके उलट बताती है! ध्यान दें:

1. नये नियम में यीशु द्वारा स्थापित कलीसिया डिनोमिनेशन रहित थी। उसने अपनी कलीसिया को संयुक्त, यानी एक ही वास्तविकता

के रूप में माना (मत्ती 16:18)। उसने अपने अनुयायियों के लगातार एकता के लिए प्रार्थना की (यूहन्ना 17:20, 21)। साफ़ है कि अपनी कलीसिया के डिनोमिनेशनों में बंटने का उसका कोई विचार या इरादा या स्वीकृति नहीं थी।

2. हमारे पास आज भी वही बीज है जिससे पहली सदी में डिनोमिनेशन रहित मसीहियत उपजी थी। बीज परमेश्वर का वचन है (लूका 8:11)। हमारा नया जन्म उस बीज के द्वारा हुआ है (1 पतरस 1:23)। इसका अर्थ यह हुआ कि बीज जीव्य है तो वह अपनी किस्म के अनुसार फल देता रहेगा, फिर उसे चाहे जहां मर्जी और जब मर्जी बोया जाए।

3. हम आज डिनोमिनेशन रहित बन सकते हैं यदि हम मनुष्यों और उनकी शिक्षाओं, धर्मसारों, विश्वास के अंगीकारों तथा विचारों से पलटकर मसीह और उसके वचन की ओर मुड़ जाएं। केवल बाइबल हमें केवल मसीही बना देगी! 21वीं सदी में हम वही बन सकते हैं जो पहली सदी के मसीही थे अगर हम वही विश्वास करने को तैयार हो जो वे विश्वास करते थे, वही आज्ञा मानने को तैयार हों जो आज्ञा उन्होंने मानी थी और वैसे ही करने को तैयार हों जैसे वह करते थे।

क्या हम केवल मसीही नहीं बन सकते? ✞

परमेश्वर ने बाइबल में क्या दिखाया है?

उसने उन सब सच्चाइयों को दिखाया है जो हमें उसके, उसके स्वभाव, उसकी खूबियों और उसके उद्देश्यों के बारे में पता होने चाहिए। उसने बाइबल में उन सब सच्चाइयों को भी बताया है जो हमें अपने स्वयं के उद्धार के बारे में और पवित्रता में बढ़ने के लिए पता होने चाहिए।

परमेश्वर ने हम पर अपने आपको, अपनी खूबियों को, अपने उद्देश्यों और अपनी योजनाओं को किस ढंग से दिखाए?

उसने ऐसा थोड़ा थोड़ा करके किया है यानी जैसे जैसे उन सच्चाइयों को समझने की और उनका इस्तेमाल करने की मनुष्य की क्षमता बढ़ती गई वैसे वैसे वह उन सच्चाइयों को प्रकट करता रहा।

''इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है'' (इब्रानियों 1:2)।

''नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहां, थोड़ा वहां'' (यशायाह 28:10)।

''पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना'' (मरकुस 4:28)।

मसीह की

–रे हॉक

''हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरे कहने का अर्थ यह है कि तुम में से कोई तो अपने आप को 'पौलुस का,' कोई 'अपुल्लोस का,' कोई 'कैफा का,' तो कोई 'मसीह का' कहता है। क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?'' (1 कुरिन्थियों 1:10–13)।

इस हवाले पर टिप्पणी करते हुए एक लेखक ने आरोप लगाया है कि केवल वही लोग ही फूट डालने वाले नहीं थे जो पौलुस, अपुल्लोस, और कैफा के थे बल्कि जो मसीह के थे वे भी फूट डालने वाले थे। परन्तु यदि वे जिन्हें ''मसीह के'' कहा गया है, फूट डाल रहे थे तो सुधार के लिए उन्हें किस ''के'' होना आवश्यक था? यदि मसीह ''के नाम पर'' बपतिस्मा पाकर वे फूट डाल रहे थे तो उन्हें किसके नाम में डुबकी दी जानी चाहिए थी।

यीशु ने जब ग्रेट कमीशन दिया तो उसने कहा, *''इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो''* (मत्ती 28 :19)। यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया जाना आवश्यक है। पिन्तेकुस्त के दिन वाले (प्रेरितों 2:38), सामरियों (प्रेरितों 8:16), कुरनेलियुस और उसके घराने (प्रेरितों 10:48), और इफिसियों (प्रेरितों 19:5) ने उस कमीशन यानी आज्ञा को माना था। ऐसा करके वे ''मसीह के'' बने थे। पौलुस न कुरिन्थियों के बताया कि उन्होंने भी ऐसा ही किया था (1 कुरिन्थियों 12:13) और लूका उस प्रमाण की पुष्टि करता है (प्रेरितों 18:8), इस कारण हम यह निष्कर्ष निकालने को बाध्य हैं कि कुरिन्थुस में जिसे ''परमेश्वर की कलीसिया'' कहा गया है वह ''मसीह की'' कलीसिया ही थी (1 कुरिन्थियों 1:2, 13)।

पौलुस ने आगे संकेत दिया कि यह बपतिस्मा यीशु के क्रूस पर दिए जाने, दफ़नाए जाने और जी उठने का रूप या टाइप था (रोमियों 6:3, 4, 17)। जब कोई पानी में दफ़नाए जाकर उसमें से जी उठता है, तो मसीह की मृत्यु में आकर उसे पहन लेता है (रोमियों 6:2–7; गलातियों 3:27)। कुरिन्थियों ने ऐसा

ही किया था। इसलिए वे ''मसीह के'' थे।

हमारे लिए पौलुस, अप्पुलोस, कैफा या कोई और व्यक्ति नहीं बल्कि यीशु क्रूस पर चढ़ा था। क्योंकि हमारे लिए यीशु को छोड़ कोई और क्रूस पर नहीं चढ़ सकता था तो फिर कुरिन्थी लोग मसीह को छोड़ किसी और ''के'' कैसे हो सकते थे?

मसीह में होने और उसके साथ एक होने के लिए यीशु के नाम पर डुबकी (बपतिस्मा) लेना आवश्यक है (इफिसियों 5:25–32)। हमें किसी और व्यक्ति या वस्तु में जाने लिए बपतिस्मा नहीं दिया जाता। कुरिन्थुस के लोगों को यीशु के नाम पर डुबकी दी गई थी इसका अर्थ यह हुआ कि बपतिस्मा उन्हें पौलुस, अपुल्लोस, या कैफा की देह में मिलाने के लिए नहीं हो सकता था (प्रेरितों 2:47; KJV)। जो बपतिस्मा उन्होंने लिया था उन्हें उन देहों या कलीसियाओं में नहीं मिला सकता था तो वे उन ''के'' कैसे हो सकते थे। अगर वे किसी के हो सकते थे तो केवल मसीह ''के'' ही हो सकते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि जिन्हें ''मसीह के'' कहा गया है वे सचमुच वहीं थे जहां उन्हें होना चाहिए था।

''मसीह के'' होकर यह समझ में आता है कि यीशु उसके लिए क्रूस पर चढ़ा, उसे ग्रहण करके नये नियम में बताए गए उसके बपतिस्मे की आज्ञा को मानता है और वह ''पौलुस'' का ''अपुल्लोस का'' या ''कैफ़ा'' का होने की कोशिश करके मसीह की देह में फूट डालने का दोषी नहीं हो सकता।

जब कुरिन्थुस में मसीह की देह के अंगों में इसे ''मसीह की पौलुसवादी कलीसिया'' मसीह की ''अप्पुलोसवादी कलीसिया'' और मसीह की ''कैफावादी कलीसिया'' में बांटने की कोशिश की तो उन्होंने एक अस्वस्थ और विनाशकारी स्थिति पैदा कर दी थी। यीशु ने कहा, *''जिस–जिस राज्य में फूट होती है, वह राज्य उजड़ जाता है; और जिस घर में फूट होती है, वह नष्ट हो जाता है''* (लूका 11:17)। मसीह की देह में फूट डालकर वे शारीरिक बन गए थे (1 कुरिन्थियों 3:3)। वे कुछ ऐसा बनाने के दोषी हो गए थे जिसे प्रभु ने नहीं बनाया या सिखाया या करने को कहा हो। यीशु ने कहा कि वह दाखलता है और उसके चेले डालियां हैं (यूहन्ना 15:1–7)। उसने यह नहीं कहा कि फूट पड़ी हुई देहें उसकी डालियां हैं।

कुरिन्थिस की कलीसिया के लिए स्वयं को पौलुस, अपुल्लोस या कैफा की देह में बांटना पाप है। वे देहें इनके सदस्य होने का दावा करने वालों का उद्धार नहीं कर सकती थीं। जब मसीही लोग यीशु मसीह को छोड़ किसी भी और वस्तु या व्यक्ति के हो जाते हैं तो वे किसी दूसरे की मानकर अपना उद्धार करने की कोशिश करने के दोषी ठहरते हैं। बाइबल के अनुसार ऐसा नहीं हो सकता और न ही होना चाहिए। फिर भी दुख की बात है कि सारे संसार में लोग पौलुसवादी और कैफावादी कलीसियाओं के सदस्य होने की कोशिश कर रहे हैं।

परमेश्वर के लोगों का वर्णन करना

-आर. एच. टैक्स विलियम्स

बहुतों के लिए नाम का बड़ा महत्व होता है, वे रहते चाहे कहीं भी क्यों न हों। हमारे नाम हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनसे हमारी कई प्रकार से पहचान जुड़ी होती है। गुज़रे ज़माने में, और आज भी कई जगह नामों का बड़ा महत्व है क्योंकि उनका अर्थ होता है। उदाहरण के लिए शमौन नामक यीशु के चेले को यीशु ने ''कैफा'' नाम दिया। ''कैफा'' का अनुवाद करने पर इसका अर्थ ''पतरस'' होता है, जिसका अर्थ ''पत्थर'' है। बाद में हम देखते हैं कि प्रभु ने इस आदमी को पत्थर क्यों कहा था, क्योंकि वह अपने विश्वास और यीशु के लिए काम में सख्त और अडोल साबित हुआ था।

नये नियम के परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक मसीह के अनुयायियों के लिए नामों या विवरणात्मक पदनामों का इस्तेमाल करते थे। उन पदनामों से उस व्यक्ति के विषय में उस नाम से कहीं अधिक का पता चलता है। उदाहरण के लिए, मेरा नाम विलियम्स है। जो लोग मुझे जानते हैं उनके लिए यह मेरी पहचान है। परन्तु मेरे लिए कई और पदनामों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है जो अजनबियों को भी मेरे बोरे में कई बातें बताते हैं। मुझे ''विवाहित'' कहा जा सकता है क्योंकि इससे यह पता चलता है कि मेरी एक पत्नी है और मैंने विवाहित होने की सभी जिम्मेदारियों को माना है। मुझे पिता भी कहा जा सकता है इसका अर्थ यह हो सकता है कि मेरे बच्चे हैं और उनके लिए साधन जुटाने और उनकी परवरिश का जिम्मा मेरा है। पदनाम किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के केवल नाम से बढ़कर बहुत कुछ वर्णन कर देते हैं।

नये नियम के समयों में यीशु मसीह के अनुयायियों के लिए कुछ पदनामों का विशेष अर्थ था। प्रेरितों 11:26 में लूका ने लिखा कि ''चेले अंताकिया में मसीही कहलाए।'' इन लोगों को मसीही कहा जा सकता था क्योंकि ये लोग यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं के पक्के मानने वाले थे। मसीही लोगों को यह नाम उन लोगों के द्वारा जो मसीही नहीं थे यूं ही नहीं दिया गया था। क्योंकि बाद में पतरस ने कहा, *''... यदि मसीही होने के कारण दुख पाए तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे''* (1 पतरस 4:16)।

परमेश्वर ने अपने लोगों को उन बहुत से पहलुओं के सम्बन्ध में जो वे हैं और जो संसार में उन्हें होना चाहिए जिसमें वह रहते हैं, दिखाने के लिए पदनाम दिए हैं। उदाहरण के लिए बाइबल के अनुसार परमेश्वर के लोगों को ''मसीह की कलीसियाएं'' कहा गया है। रोमियों 16:16 में पौलुस ने लिखा, *''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं*

की ओर से नमस्कार।''

पौलुस मकिदुनिया, अखाया कुरिन्थुस और अन्य जगहों की कलीसियाओं के साथ रहा था। बेशक उसने मसीही लोगों से कहा था कि वह रोम के भाइयों को लिखने वाला है और इस कारण उन सब ने पौलुस के पत्र के माध्यम से उन सब को अपना अपना सलाम भेजा।

नये नियम में ''कलीसिया'' हमेशा मसीही लोगों के समूह को कहा गया है जो मसीह के हैं। मसीह ने कहा, मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा (मत्ती 16:18)। कलीसिया उन लोगों से बनी थी जो मसीह के हैं, क्योंकि उसने उन्हें अपने लहू से मोल लिया था (प्रेरितों 20:28)। ''मसीह की कलीसिया'' यानी चर्च ऑफ क्राइस्ट (जिसका अर्थ है ''मसीह के लोग'') कोई डिनोमिनेशन का नाम नहीं है बल्कि यह परमेश्वर के लोगों का बाइबल के अनुसार, विवरणात्मक पदनाम है जिससे यह पता चलता है कि वे लोग मसीह की सम्पत्ति हैं क्योंकि उसने अपने लहू से उनका दाम चुकाया है।

नये नियम में मसीही लोगों को कई और विवरणात्मक पदनाम दिए गए हैं जो बाइबल के अनुसार हैं। उदाहरण के लिए, 1 तीमुथियुस 3:15 में पौलुस ने कहा कि उसने तीमुथियुस को लिखा था जो इफिसुस नामक नगर में मसीही लोगों के साथ काम कर रहा था, ताकि *''तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खम्भा और नीव है; कैसा बर्ताव करना चाहिए।''* इस आयत में परमेश्वर के लोगों के तीन विवरणात्मक नाम हैं। पहला, वे परमेश्वर का घराना, या परमेश्वर का परिवार'' हैं। इस पदनाम से यह पता चलता है कि मसीही लोग परमेश्वर के परिवार के लोग हैं यानी वे एक परिवार हैं। परमेश्वर हमारा पिता है और हम भाई और बहनें हैं। परमेश्वर ने अपने परिवार के लिए आवश्यक चीज़ें उपलब्ध करवाईं और हम लोग प्रार्थना के द्वारा उससे सहायता मांगते और परिवार की देखभाल के लिए कहते हैं। इस आयत में परमेश्वर के लोगों को ''जीविते परमेश्वर की कलीसिया'' भी कहा गया है। कलीसिया यानी मसीही लोगों का काम परमेश्वर, यीशु, पवित्र आत्मा, उद्धार, स्वर्ग आदि के सम्बन्ध में सच्चाई की रक्षा करना, इसका प्रचार करना और इसको बनाए रखना आवश्यक है। ''सारे जगत में'' सुसमाचार सुनाने का ज़िम्मा कलीसिया को दिया गया है।

कलीसिया के सम्बन्ध में पवित्र शास्त्र में पवित्र आत्मा द्वारा लगभग 25 और पदनाम दिए गए हैं। वे सभी बाइबल के अनुसार हैं और विवरणात्मक हैं। अच्छा होगा यदि हम डिनोमिनेशनों के नामों का त्याग करके परमेश्वर के लोगों के लिए उसके दिए पदनामों का इस्तेमाल करें। इससे हो सकता है कि हमें बेहतर सेवा करने और शुद्ध जीवन जीने की प्रेरणा मिले।

उसकी सुनो

–लियोन बार्नस

एक पल के लिए मान लें कि आप शमौन पतरस हैं आपको यीशु द्वारा बारह चेलों में चुना गया है। आपने उसके पीछे चलने के लिए और उसके लिए जीना सीखने के लिए अपनी इच्छा से कारोबार और घर परिवार छोड़ दिया है। आज जब यीशु प्रार्थना के लिए पहाड़ पर जाता है तो वह आपको और याकूब और यूहन्ना को भी अपने साथ ले जाता है। यीशु के साथ प्रार्थना करते हुए आपकी आंख लग जाती है। आखिर पहाड़ पर चढ़ना भी तो थका देने वाला था।

अचानक आप चौंक जाते हैं। आप आखें खोलते हैं और आपको यीशु का रूप बिल्कुल बदला हुआ दिखाई देता है! उसका रूप बर्फ के जैसा सफ़ेद है! उसका पूरा चेहरा चमक रहा है! इतना ही नहीं, आप मूसा और एलिय्याह को उसके साथ बातें करते हुए देखते हैं। ये दोनों उसकी आने वाली मृत्यु पर चर्चा कर रहे हैं।

आपको संसार में क्या करना चाहिए क्योंकि आपको तो पता नहीं है कि क्या करना है जिस कारण आप यीशु से कहते हैं, *''हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है। यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।''* इससे पहले कि आप अपने मुंह से अपनी पूरी बात निकाल पाते हैं, एक चमकता हुआ बादल उस पहाड़ को ढांप लेता है और बादल में से आवाज आती है, *''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इसकी सुनो''* (मत्ती 17:1–5)।

यदि अभी भी आप अपने आपको पतरस के रूप में देख सकते हैं तो क्या आपको नहीं लगता कि यह पूरी घटना ही चौंका देने वाली रही होगी?

पर जो कुछ आपने सुझाव दिया था उसमें गलत

क्या था? पहले तो यह कि तीन मण्डप बनाना यह प्रभाव देता है कि ये तीनों कायम रहेंगे। यह यह विचार देता है कि पहाड़ की चोटी परमेश्वर की उपस्थिति की शानदार हवा के साथ, मठ जैसी अवस्था में लोगों से दूर ऐसी जगह है जहां हम रहना चाहते हैं। परन्तु यीशु या प्रेरितों के लिए पहाड़ पर भी रहने की परमेश्वर की योजना कभी नहीं थी। किया जाने वाला काम तराई में था जहां एक लड़के को चोट लगी थी और उसका पिता चंगाई के लिए उसके पास लेकर आया था। दूसरा, यह सुझाव इसलिए गलत था क्योंकि इसने मूसा और एलिय्याह को यीशु के बराबर खड़ा कर दिया था। वे महान लोग थे परन्तु यीशु देह में प्रकट हुआ परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1, 14)।

परन्तु पतरस का सुझाव शायद इसलिए गलत था कि वह तब बोल रहा था जब उसे सुनना चाहिए था। *''यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो।''* क्या यह समस्या हम सब के सामने नहीं आती? पतरस की तरह हमें लगता है कि हमें कुछ कहना चाहिए, हर काम में अपना सुझाव देना चाहिए। परन्तु जब हमें पता न हो कि क्या कहना है, तो अच्छा यही होता है कि हम कुछ न कहें। किसी ने कहा है कि यह तथ्य कि परमेश्वर ने हम सब को दो काम केवल एक मुंह दिया है, हमें समझ में आता है।

यीशु तथा परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाले नये नियम के लेखकों ने जो मुख्य बात बताई वह यह है कि हमें ख्याल रखना चाहिए हम कैसे सुनते हैं। याकूब ने लिखा है, *''हे मेरे भाइयो, यह बात तुम जान लो हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो''* (याकूब 1:19)।

कितनी ऐसी बातें हैं जो परमेश्वर हमें सुनाना चाहता था जो हम निर्णय लेने में इतना व्यस्त थे कि हम आगे क्या करें। बहुत से लोगों के कान हैं पर वे सुनते नहीं हैं। हमने उन बातों की ओर ध्यान नहीं दिया है जो असल में हमें सीखनी आवश्यक है।

पहाड़ से उतरते हुए यीशु और तीन जन जब बातें कर रहे तो वे यीशु को यह बताते हुए सुन रहे थे कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला उससे पहले आने वाला एलिय्याह कैसे था। उन्हें जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था, जी उठने के बाद तक उन सब बातों को अपने मन में रखने को कहा गया था। परन्तु उनके पहाड़ के नीचे उतरने से पहले ही आने वाली गड़बड़ी का शोर पड़ गया था। दुष्ट आत्मा से ग्रस्त लड़के को चेलों के पास लाया गया था, जिन्हें यीशु ने दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ दी थी, परन्तु उनके कोशिश करने के बावजूद, कुछ नहीं हुआ था।

शेष भाग पेज 46 पर